जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 30 संख्याः 216 प्रभात उदयपुर, गुरुवार 8 जून, 2023 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

मिलिए एक ऐसे लार्वा से, जो जिस पौधे पर होता है उसी के जैसा बन जाता है, अर्थात् वैसा ही रंगरुप धारण कर लेता है। ज़ाहिर है, इस कीट को ''कैमफ्लाज़्ड लूपर'' नाम मिला है, खुद को छिपाने की इसकी असाधारण क्षमता के कारण। ये लार्वा, जिन्हें इंचवर्म कहते हैं और बाद में जो ''ग्रीन मॉथ'' बन जाते हैं, जिस फूल को खा रहे होते हैं, उसके टुकड़ों को अपनी जैलटिन जैसी लार की मदद से पीठ पर चिपका लेते हैं और इस तरह खुद भी उसी फूल का हिस्सा लगने लगते हैं। यही नहीं, जब इंचवर्म किसी अलग प्रकार के फूल को खाना शुरु करते हैं तो पुरानी पंखुड़ियों को पीठ पर से हटा देते हैं तथा नई पंखुड़ियाँ चिपका लेते हैं। युनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ कैरोलाइना के डॉ. मीकलूस ट्राइबर ने 1919 में इस प्रक्रिया को समझाया था। उन्होंने एक लार्वा को पकड़ कर अपने पास रखा, जैसे ही वो किसी फूल की पंखुड़ी को चिपकाता तो डॉ. ट्राइबर उसे हटा देते थे, यह देखने के लिए वह कितनी जल्दी दूसरा रुप धारण करता है। उन्होंने उसे अलग-अलग फूलों पर भी रखा। उन्होंने बताया कि, इंचवर्म जिस फूल को खाता है उसी के जैसा कॉस्ट्यूम धारणा कर लेता है। अपने आप को छुपाने के लिए वह फूल के विभिन्न भागों का इस्तेमाल करता है। इस जीव की बचाव रणनीति उसे पक्षियों का भोजन बनने से बचाती है। वैसे तो अधिकांश लार्वा किसी ना किसी प्रकार की ''कैम्फ्लाज़'' रणनीति काम में लेते हैं। कोई पेड़ की छाल जैसा लगता है, कोई कांटे जैसा, तो कोई चिड़िया की बीट जैसा, पर लूपर की टैक्नीक सबसे निराली है।

चारों विधानसभा इलैक्शन में चुनाव अभियान की मुख्य जिम्मेवारी प्रियंका गांधी पर होगी

इस निर्णय के तहत, प्रियंका गांधी 12 जून को जबलपुर में रैली आयोजित कर मध्य प्रदेश के चुनाव अभियान की शुरूआत करेंगी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में सफल चुनाव प्रचार अभियान के बाद प्रियंका गांधी इस साल के अंत में होने वाले चार विधानसभा राज्यों के चुनावों में स्टार प्रचारक के रूप में उभर रही हैं। कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में भाजपा को शानदार जीत मिली है।

वे मध्य प्रदेश के लिए चुनाव प्रचार की शुरुआत जबलपुर से करने जा रही है, जहां वे 12 जून को एक सभा को संबोधित करने वाली हैं। सूत्रों का कहना है कि वे इन राज्यों में गहन चुनाव प्रचार करेंगी क्योंकि कर्नाटक में उनके प्रचार अभियान को उनके भाई राहुल गांधी से ज्यादा सफल माना गया।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस के सूत्रों ने कहा कि अगर राहुल गांधी चुनाव प्रचार से दूर रहते हैं तो पार्टी ज्यादा खुश होगी, क्योंकि कोई भी उन्हें प्रचार के लिए नहीं चाहता है। एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि मध्य प्रदेश में राहुल गांधी के प्रति ज्यादा आकर्षण नहीं है।

- **कर्नाटक व हिमाचल में प्रियंका गांधी की रैलियों व आम सभाओं का अच्छा असर देखा गया था, अतः चार राज्यों, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ व तेलंगाना में वर्ष के अंत में होने वाले चुनावों में पार्टी प्रियंका को प्रमुख भूमिका देना चाहती है।**
- **कर्नाटक के चुनाव में रणनीति की दृष्टि से जीत का कारण था, पार्टी ने टिकट वितरण व चुनाव अभियान की शुरूआत काफी जल्दी कर दी थी।**
- **पर, अब चार राज्यों के चुनाव में ऐसा होता नजर नहीं आ रहा। खड़गे अपनी पारिवारिक जिम्मेवारियों में उलझे हुए हैं तथा राहुल अभी विदेश यात्रा से नहीं लौटे हैं।**
- **कर्नाटक में कांग्रेस को ''अरली स्टार्ट'' दिलाने में खड़गे की भूमिका थी, वे दबाव बनाकर टिकट वितरण व चुनाव अभियान को पटरी पर ले आए थे तथा दोनों प्रतिद्वन्दी खेमों को आपस में उलझने नहीं दिया था।**

उक्त नेता ने कहा कि प्रियंका गांधी की एक दर्जन सभाओं से राज्य में पार्टी को भारी लाभ होगा। मध्य प्रदेश में भाजपा में भारी अन्तर्कलह है और इससे भी कांग्रेस को भारी लाभ होगा। बिल्कुल वैसे ही जैसे कर्नाटक व हिमाचल प्रदेश में हुआ था।

आगामी चुनावों के लिए भाजपा ने तैयारी शुरु कर दी है और पार्टी की उच्च स्तरीय मीटिंग्स हो रही है। हालांकि इन सभी राज्यों में पार्टी की हालत खस्ता है क्योंकि यहां भारी अन्तर्कलह है।

इन चार राज्यों के लिए कांग्रेस को अभी अपनी चुनावी रणनीति बनानी है क्योंकि राहुल गांधी विदेश में है और खड़गे कुछ निजी पारिवारिक समस्याओं में फंसे हैं।

सूत्रों का कहना है कि कर्नाटक में चुनावी जीत का एक बड़ा कारण यह था कि यहां पार्टी के टिकट वितरण और चुनाव प्रचार जल्दी शुरु कर दिया गया, अंतिम समय सीमा तक इंतज़ार नहीं किया था। पार्टी नेताओं ने कहा था यह सब खड़गे की पहल पर किया गया था।

अगर कांग्रेस इसी तरीके पर चलती है तो पार्टी के जीतने की बेहतर संभावनाएं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'रेलवे सेफ्टी कार्यों के लिये आवंटित राशि, छोटे-मोटे अन्य कामों पर खर्च हुई'

2022 की सी.ए.जी. रिपोर्ट में कई बार यह भी ''हाई-लाईट'' किया गया है कि, कई वर्षों से रेलवे सेफ्टी के लिए आवंटित राशि ''अण्डर युटिलाइज़्ड'' (कम खर्च हुई) है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। सरकारी दस्तावेज बताते हैं कि रेल सुरक्षा संबंधी कार्यों के लिए पिछले वर्षों में आवंटित धनराशि का या तो बहुत कम उपयोग हुआ है, या इन्हें अन्य उद्देश्यों के लिए हस्तांतरित कर दिया गया है।

2017-18 के बजट में राष्ट्रीय रेल संरक्षा कोष (आर.आर.एस.के.) का गठन 1,00000 करोड़ रू. के कॉर्पस फण्ड से किया गया है। इसमें से 20,000 करोड़ रू. प्रतिवर्ष सुरक्षा कार्यों पर खर्च करना था, जिसमें से 15,000 करोड़ रू. केन्द्र सरकार द्वारा सकल बजट गत समर्थन के रूप में दिया जाना था और 5000 करोड़ रू. भारतीय रेल्वे को आंतरिक आय से देने थे। केन्द्र सरकार ने तो अपने हिस्से के 15,000 करोड़ रूपये का वार्षिक हिस्सा दे दिया मगर रेल्वे 2017-18 से 2020-21 तक चार वर्ष में कुल 4225 करोड़ रू. ही जुटा पाई। यह तथ्य सी.ए.जी. की मार्च 2022 की रिपोर्ट में अंकित किया गया है। इसलिए आर.आर.एस.के. में राशि का कुल निवेश निर्धारित से 15,775 करोड़ रू. कम था। सी.ए.जी. ने टिप्पणी की, ''इस स्थिति से आर.आर.एस.के. के गठन का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है।

- **वाउचरों का गहरा अध्ययन करके सी.ए.जी. ने यह भी पाया कि, रेलवे सेफ्टी वर्कर्स के लिये आवंटित राशि का उपयोग ''नॉन सेफ्टी'' कामकाज, जैसे, यात्रियों की सेवाओं को ''अपग्रेड'' करने, के लिये, अलमारी, बर्तन, क्रॉकरी (चाय के प्याले आदि) तथा फर्नीचर खरीद पर खर्च हुए।**

देश के शीर्ष ऑडिटर द्वारा की गई जांच में आर.आर.एस.के. के कॉर्पस फण्ड से दिसंबर 2017, मार्च 2019, सितंबर 2019 तथा जनवरी 2021 के खर्चे के वाउचरों की नमूने के तौर पर जांच में ज्यादा चिंताजनक स्थिति सामने आई। 2995.58 करोड़ रूपए के वाउचरों की जांच में पाया गया कि यह राशि गैर सुरक्षा कार्यों पर खर्च की गई थी जिसमें सरकारी सुविधाओं को बेहतर बनाना, अलमारियों, बर्तनों, क्रॉकरी और फर्नीचर पर खर्च शामिल है।

सरकारी दस्तावेजों में यह ज्ञात होता है कि आर.आर.एस.के. के प्राथमिकता वाले कार्यों पर राशि का उपयोग 2017-18 में 81.55 प्रतिशत से घटकर 2019-20 में 73.76 प्रतिशत रह गया है, जबकि अधिकांश रेल्वे जोन्स की उपयोगिता 60 प्रतिशत से अधिक नहीं थी। पश्चिमी रेल्वे ने केवल 44.36 प्रतिशत राशि का उपयोग किया। इसके मुकाबले प्राथमिकता-2 एवं प्राथमिकता-3 में वृद्धि दिखाई थी। सी.ए.जी. में बढ़ते हुए कार्य आर.आर.एस.के. के मार्गदर्शक सिद्धांतों के विरूद्ध है।

इन वर्षों में ट्रैक नवीनीकरण के महत्वपूर्ण कार्य पर आवंटन और व्यय 2018-19 में 9607.65 करोड़ रू. के 2019-20 में घटकर 7414

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भाजपा के टॉप 5 नेताओं की बैठक

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। भाजपा के शीर्ष नेताओं ने कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में मिली करारी हार के बाद पार्टी के पुनर्गठन को लेकर दो दिवसीय बैठक की।

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा और संगठन महामंत्री बी.एल. संतोष (आर.एस.एस. से लाए हुए) के अलावा उपाध्यक्ष सौदान सिंह और महासचिव सुनील बंसल भी बैठक में शामिल हुए।

- **हिमाचल प्रदेश और फिर कर्नाटक की हार से आहत भाजपा अब कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती, इसीलिए आगामी चुनावों की रणनीति बनाने के लिए पार्टी के 5 वरिष्ठतम नेताओं की दो दिवसीय बैठक की जा रही है।**

वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'मुझे एक पार्टी ऐसी बतायें जिसने भाजपा से ''रिलैशनशिप'' नहीं रखी'

जद (एस) नेता देवेगौड़ा की यह टिप्पणी विपक्ष की एकता के प्रयास के बारे में काफी तीखा कटाक्ष है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। कर्नाटक में विधानसभा चुनावों में तीसरी ताकत की हार के बाद राजनैतिक ताकतों का पुनर्गठन हो रहा है। तीसरी ताकत, जनता सैक्युलर जिसकी ताकत कम हो गई है, क्योंकि कांग्रेस और भाजपा ने पुराना मैसूर क्षेत्र में इसके वोट बैंक में भारी सेंध लगाई, जिससे यह सत्ता के समीकरणों से बाहर हो गई है।

यही वजह है कि भारतीय राजनीति के वरिष्ठम नेताओं में से एक, जनता दल (एस) के संस्थापक एच.डी. देवेगौडा को भाजपा के साथ मेलजोल बढ़ाते देखा जा रहा है और वे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तारीफ में बयान दे रहे हैं।

स्पष्ट है कि भाजपा और जनता दल (एस) अगर अलग-अलग चुनाव लड़ते हैं और एक दूसरे के वोट काटते हैं तो कांग्रेस को लाभ होगा। कांग्रेस के साथ भारी जन समर्थन है जैसा कि विधानसभा चुनावों में मिली शानदार जीत से स्पष्ट है। विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 42.9 प्रतिशत और भाजपा को 36 प्रतिशत वोट मिले हैं लेकिन जद (एस) का वोट प्रशित 5 प्रतिशत कम हुआ है और 18.3 प्रतिशत से घट कर 13.3 प्रतिशत ही रह गया है। जैसा कि

- **यहां यह भी उल्लेखनीय है कि, देवेगौड़ा की पार्टी ने संसद के नये भवन के उद्घाटन समारोह का बहिष्कार करने की विपक्ष की अपील को ठुकराते हुए, उद्घाटन समारोह में भाग लिया था।**
- **विधानसभा चुनावों में जद (एस) के वोट बैंक में 5 प्रतिशत की कमी आयी थी, जिसका लाभ कांग्रेस को मिला था।**
- **इस घटत को रोकने के लिये, लोकसभा चुनावों में भाजपा व जद (एस) में गठबंधन नहीं तो, कम से कम ''अण्डरस्टैण्डिंग'' (सहयोग की भावना) तो जरूर पनपेगी।**

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ओडिशा में एक और रेल हादसा

जाजपुर, 7 जून। ओडिशा के जाजपुर रोड रेलवे स्टेशन पर बुधवार को एक मालगाड़ी की चपेट में आने से छह मजदूरों की मौत हो गई और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। ये मजदूर मालगाड़ी के नीचे आराम कर रहे थे। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मजदूरों ने भारी बारिश से बचने के लिए खड़ी हुई मालगाड़ी के नीचे शरण ली थी कि तभी अचानक बिना इंजन की मालगाड़ी चल पड़ी और मजदूरों को उसके नीचे से निकलने का मौका नहीं मिला।

- **आँधी -तूफान के कारण बिना इंजन की मालगाड़ी खिसकने लगी, अँधड़ से बचने के लिए रैंक के नीचे छिपे 6 मजदूरों की कटकर दर्दनाक मौत हो गई।**

रेलवे के एक प्रवक्ता ने कहा, अचानक आंधी चली। मजदूर बगल की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शरद पवार का मानना है, देश में ''भाजपा विरोधी'' लहर चल रही है

भाजपा द्वारा हाल ही में लिये गए कुछ राजनीतिक निर्णय पवार के इस आकलन की कुछ पुष्टि तो जरूर करते हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। नैशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.) के प्रमुख शरद पवार ने आज दावा किया कि देश में एक भाजपा विरोधी लहर है और कर्नाटक नतीजों को देखें तो देश की जनता बदलाव चाहती है। लगता है सत्तारूढ़ भाजपा मोदी सरकार के हालिया कदमों को देखते हुए कुछ ऐसा ही महसूस करती है।

भाजपा न केवल सक्रिय रूप से नए सहयोगी दलों को एन.डी.ए. में लाने की कोशिश कर रही है बल्कि महिला पहलवानों के मुद्दे को सुलझाने का प्रयास कर रही है। आंदोलनकारी खिलाड़ियों की गृह मंत्री अमित शाह से और फिर खेल मंत्री अनुराग ठाकुर से मुलाकात से इस बात का स्पष्ट संकेत मिलता है।

भाजपा ने कथित रूप से कर्नाटक में जनता दल (एस) और पंजाब में शिरोमणि अकाली दल को एन.डी.ए. में शामिल होने के लिए मना रही हैं। अकाली दल ने किसान आंदोलन की वजह से एन.डी.ए. छोड़ दिया था।

संक्षेप में कहे तो भाजपा देश की जनता पर घटते प्रभाव को लेकर चिंतित है। यह सही है कि अभी भाजपा ने तय नहीं किया है कि वह किन मुद्दों को लेकर चुनाव में उतरेगी। सांप्रदायिक ध्रुवीकरण से मदद मिलेगी या भाजपा को अलग दृष्टिकोण अपनाना होगा, इस विषय पर गहन मंथन चल रहा है जिसमें आर.एस.एस. के वरिष्ठ नेता भी शामिल हैं।

पवार, जिनके बारे में माना जाता है कि वे राजनीति की हवा की दिशा को पढ़ना जानते हैं और राजनैतिक रूझान की सही भविष्यवाणी करते हैं, ने कहा कि अगर देश की जनता का यही मानस रहा तो आगामी चुनावों में देश बदलाव देखेगा।

- **उदाहरण के लिये, कर्नाटक में देवेगौड़ा की पार्टी जद (एस) व पंजाब में अकाली दल से बातचीत आरंभ की है भाजपा ने, उन्हें दोबारा भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन, एन.डी.ए. में शरीक करने के लिए।**
- **भाजपा ने महिला कुश्ती खिलाड़ियों के आंदोलन को जल्द से जल्द निबटाने का प्रयास भी किया है, गृह मंत्री की खिलाड़ियों से सीधी लम्बी वार्ता करवाकर।**
- **भाजपा व संघ के नेताओं की बैठक आयोजित की गई है क्योंकि देश में भाजपा के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है, ऐसा बताया जाता है कि, ये नेतागण इस मसले पर चर्चा कर रहे हैं कि, आगामी चुनाव में भाजपा किस मुद्दे को चुनावी मुद्दा बनाये। क्या साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण से मदद मिलेगी या कोई और मुद्दा पकड़ना चाहिये।**

औरंगाबाद से प्रैस से बात करते हुए पवार ने महाराष्ट्र की छोटी-मोटी घटनाओं को धार्मिक रंग देने की कोशिश का विरोध किया और कहा कि यह अच्छा संकेत नहीं है।

तेजी से उभरती राजनैतिक वास्तविकताओं की पृष्ठभूमि में शरद पवार ने कहा कि मौजूदा परिदृश्य को देखें तो मुझे लगता है कि भाजपा विरोधी लहर चल रही है। कर्नाटक के चुनाव नतीजों को देखे तो लगता है कि ''देश की जनता बदलाव के मूड में है। और अगर लोगों की यही मानसिकता चलती रही तो आगामी चुनावों में देश में बदलाव होगा। और यह कहने के लिए किसी ज्योतिषी की जरूरत नहीं है।''

लोकसभा चुनाव व महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव एक साथ कराए जाने पर संभावनाओं के बारे में पूछने पर एन.सी.पी. प्रमुख ने कहा कि उनकी पार्टी के कई लोगों और उनके सहयोगी दलों में से अधिकांश की यही सोच है।

पवार ने कहा कि लेकिन कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजों को देखते हुए मुझे नहीं लगता कि सत्तारूढ़ पार्टी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उत्तराखण्ड में मुस्लिम विरोधी पोस्टर

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जून। एक ओर जहां मणिपुर जल रहा है तो हिमालय के राज्य उत्तराखण्ड में भी समस्या सुलग रही है। वहां उत्तरकाशी के पुराला कस्बे में पोस्टर लगाए गए हैं जिनमें मुसलमान दुकानदारों को 15 जून तक अपनी दुकानें बंद करने या ''नतीजा भुगतने'' को तैयार रहने की चेतावनी दी गई है।

- **एक लड़की के अपहरण की कोशिश को लेकर राज्य में कई जगहों पर प्रदर्शन हो रहे हैं और मुस्लिम विरोधी पोस्टर भी लगाए जा रहे हैं।**

इस भाजपा शासित राज्य में सांप्रदायिक तनाव 26 मई से बढ़ रहा है। जब दो आदमियों, जिनमें एक मुस्लिम था, के द्वारा एक हिन्दू लड़की

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)